11 / 04 / 82 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

विक्रमों के संन्यास द्वारा विक्रमजीत बनने का अनुभव

➢➢ मैं ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मण आत्मा हूं

➳ _ ➳ मुरली में बाबा ब्राह्मणों की विशेषताऐं गिनवा रहें हैं...

→ मैं अपने आप को चेक करती हूं...

→ मैने अपने कर्मों में कितनी श्रेष्ठता धारण की है...

→ सर्व कर्म सुकर्म हैं...

→ कलयुगी ब्राह्मणों के समान तो नही...

■ केवल नाम की ब्राह्मण तो नही हूं...

➳ _ ➳ मैं उच्च रॉयल कुल की आत्मा हूं...

→ विष्णुवंशी हूं...

→ तो मेरी चलन साधारण नही हो सकती...

→ विकर्म नही कर सकती...

→ तमोगुणी कर्म व संकल्प भी मुझ ब्राह्मण आत्मा के लिये निषेध हैं...

■ मेरा कोई भी कर्म किसी विकार के वशीभूत नही हो सकता...

➢➢ मैं हीरो पार्टधारी आत्मा हूं

➳ _ ➳ अलबेलेपन का त्याग...

→ मेरा हर सेकंड अलौकिक है,अमूल्य है...

→ हीरों से भी ज्यादा मूल्यवान हैं...

→ तो अपने समय का मूल्य जान कर्म करने वाली आत्मा हूं...

■ मेरे कर्मों के सुकर्मों में परिवर्तन का आधार है चेकिंग...

➳ _ ➳ अमृतवेले से अपने सब कर्मों को चेक करती हूं

→ उठना , बैठना, सोना, चलना, खाना, पीना, सब कर्म श्रीमत प्रमाण...

→ इससे मेरे कर्म श्रेष्ठता धारण कर रहे है...

→ व्यर्थ समाप्त हो सुकर्म में परिवर्तित हो चला है...

→ मेरी दृष्टि, बोल, संकल्प,सब मूल्यवान बनते जा रहे हैं...

■ स्वयं ही व्यर्थ और विक्रम का त्याग होता जा रहा है।

■ श्रीमत अनुरूप हो मेरे सारे कर्म समर्थ बन गए है।

■ मेरा वर्तमान और भविष्य डबल फल वाला बन गया है।

■ पुराने संस्कारों की अधीनता समाप्त होने से मैं आत्मा स्वराज्याधिकारी अर्थात प्रिंस बन गयी हूं।

■ विक्रमों का सन्यास कर मैं सुकर्मा, विक्रमाजीत बन गई हूं।